छायावाद
प्रमुख कवि एवं काव्य

जयशंकर प्रसाद :— प्रसादजी का जन्म काशी के प्रतिष्ठित कान्यकुब्ज वैश्य परिवार में 1889 ई० को हुआ था, इनके पिता का नाम श्री देवी प्रसाद था, वे सुँघनी साहु नाम से प्रसिद्ध थे। बौद्धकालीन इतिहास, पुराण, स्मृति आदि विषयों के अध्ययन से भी प्रसादजी को (अवकाश मिला) वंचित नहीं हुआ। सन 1937 ई० में राजरोग से इनका देहावसान हो गया।

छायावादी काव्य का श्रीगणेश प्रसादजी से ही माना जाता है। वे अपने प्रारंभिक काल में ब्रज-भाषा में कविता लिखते थे तत्पश्चात द्विवेदी जी के प्रभाव में आकर खड़ीबोली में कविता करने लगे। ब्रजभाषा में — चित्राधार। खड़ीबोली → - कानन-कुसुम, महाराणा का महत्व, प्रेम पथिक।

रचनाएँ :—

काव्य :- प्रेम-पथिक, चित्राधार, करुणालय, महाराणा का महत्व, कानन कुसुम, झरना, आँसू, लहर, कामायनी।

नाटक :- विशाख, राज्यश्री, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, कामना, एक घूँट, ध्रुवस्वामिनी।

उपन्यास :- तितली, कंकाल, इरावती।

कहानी :- आकाशदीप, मधुआ, प्रतिध्वनि।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के कवियों में प्रसादजी निश्चय ही बेजोड़ हैं। इसका कारण इनका रसवादी दृष्टिकोण है। इनकी रचनाओं में विविध रसों का सुंदर समावेश मिलता है। रसों के सुंदर प्रयोग के साथ-साथ अलंकारों एवं छन्दों का भी उपयुक्त प्रयोग प्रसादजी के काव्यों में मिलता है। प्रसादजी की भाषा संस्कृत निष्ठ खड़ीबोली है। मनोभावों का द्वन्द्व चित्रित करने तथा गंभीर विषयों के प्रतिपादन के लिए यही भाषा अधिक उपयुक्त थी। इनकी भाषा में ओज तथा माधुर्य गुणों का प्राधान्य अधिक है।

Scanned with Cam

(सूर्य कुमार)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' :— निराला का जन्म सन 1896 ई० में (पश्चिम बंगाल) महिषादल रियासत के मेदिनीपुर ~~सम्ब~~ जिले के अन्तर्गत गढ़कोला ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री राम सहाय त्रिपाठी था। निराला ही ऐसे एकमात्र कवि हैं, जिन्हें हिन्दी जगत में सबसे अधिक साहित्यिकों का कोप-भाजन बनना पड़ा था। उनकी सर्वप्रथम रचना 'जुही की कली' जिसे महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती में छापने से इनकार कर दिया था। बाद में यह रचना सन् 1921 में प्रकाशित हुई।

इन्होंने स्वाध्याय द्वारा संस्कृत-साहित्य, दर्शनशास्त्र, अंग्रेजी साहित्य तथा बंगला साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। अपनी पत्नी मनोहरा देवी के संसर्ग में आकर निरालाजी ने हिन्दी साहित्य का अध्ययन प्रारंभ किया, और धीरे-धीरे बंगला भाषा का कवि हिन्दी भाषा में कविता करने लगा। बाद में इन्होंने 'समन्वय' तथा 'मतवाला' पत्रों का संपादन भी किया। इनकी मृत्यु 1961 ई० को हुई।

कहानी संग्रह — सुकुल की बीवी, उपन्यास — अलका, चमेली

रचनाएँ :— अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, आराधना, अर्चना, गीतगुंज, सांध्य-काकली, अपरा।

निरालाजी स्वभावतः क्रांतिकारी हैं। इनकी क्रांति सर्वप्रथम छंद के क्षेत्र में हुई। इन्होंने मुक्तछंद का प्रयोग कर सफलतापूर्वक उसका अपनी रचनाओं में निर्वाह भी किया। मुक्तछंद में प्रस्तुत की गई निराला की रचनाओं में लय या नाद सौंदर्य के साथ अपनी गति है अपनी स्वाभाविकता है। इसपर भी इनके मुक्तछंदों में दो भेद हो गए हैं — एक में तो तुकों के नियम का समावेश है,

Scanned with Cam

इसमें भी तुक का पालन नहीं किया गया है।

– दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी-सी
धीरे- धीरे - धीरे ~~~

'निराला' हिन्दी के श्रेष्ठ कलाकार हैं। इन्होंने गीत, मुक्तक, प्रबंध आदि के लिए प्रायः मुक्तछंद की शैली ही अपनाई। इनकी भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली है। इस पर संस्कृत और बंगला का विशेष प्रभाव है। इनकी भाषा में ओज एवं प्रसादगुण का आधिक्य है, जिससे सरल भावों की व्यंजना हुई है। शब्द चित्र प्रस्तुत करने में निराला अद्वितीय हैं। कहीं-कहीं अत्यंत क्लिष्ट संस्कृतगर्भ भाषा का प्रयोग भी निराला में मिलता है। 'राम की शक्ति पूजा' इनकी ओजपूर्ण और शक्तिशाली भाषा का उदाहरण है।

सुमित्रानंदन पंत :- पंतजी का जन्म 1900 ई० में अल्मोड़ा के निकट कौसानी नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता गंगादत्त पंत एक ख्यातिप्राप्त जमींदार थे। पंतजी को बचपन में ही मातृस्नेह से वंचित हो जाना पड़ा। इसका पंतजी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। 1920 ई० में गाँधीजी के प्रभाव में आकर विद्यालयपन से ही अवकाश लेना पड़ा।

रचनाएँ :- पंत जी की प्रारंभिक रचनाएँ 'कागज-कुसुम' एवं 'सिगरेट का धुआँ' है। इसके पश्चात् – उच्छ्वास, वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णधूलि, स्वर्ण किरण, मधुज्वाल, युगपथ, उत्तरा, अतिमा, वाणी, कला और बूढ़ा चाँद, किरण-वाणी, पौ फटने से पहले, गीतहंस, लोकायतन (महाकाव्य)

गद्य – हार (उप०), पाँच कहानियाँ, शिल्प दर्शन

छायावाद : पुर्नमूल्यांकन, कला और संस्कृति,
काव्य रुपक :- ज्योत्सना, रजत शिखर, शिल्पी, उत्तरशती
आत्मात्मक जीवन-चरित :- मैं और मेरा जीवन

पंत जी की संपूर्ण काव्यरचना को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है- सौंदर्य-युग, प्रगति-युग तथा अध्यात्म-युग।

1. सौंदर्य युग:- वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन
2. प्रगति युग:- युगवाणी, ग्राम्या।
3. अध्यात्म-युग - स्वर्णधूलि, स्वर्णकिरण, उत्तरा, अतिमा, युगपथ आदि।

पंतजी की नवीन काव्यकृतियाँ ' कला और बूढ़ा चाँद, अतिमा, पल्लविनी, रश्मिबंध, ग्रामीणता, और लोकायतन के अतिरिक्त 'चिदंबरा - विशेष उल्लेखनीय हैं। रूसी सरकार से पुरस्कृत पंतजी के लोकजीवन का महाकाव्य 'लोकायतन' उनकी रचनाओं - 'स्वर्णकिरण' 'स्वर्णधूलि' और उत्तरा आदि की शृंखला की अंतिम कड़ी है।

पंतजी को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। इनमें उच्च कलाकार की प्रतिभा भी निहित है। डॉ० नगेन्द्र के शब्दों में, - " पंतजी प्रधानरूप से कलाकार हैं इनके काव्य में सर्वप्रथम का इन्हें सूक्ष्म ज्ञान है शब्दों का मूर्तरूप, ध्वन्यात्मकता, वर्णयोजना आदि इनके काव्य में सूक्ष्म रूप में दर्शनीय है। अलंकारों में उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, उल्लेख, स्मरण, संदेह, विभावना, विशेषण विपर्यय, मानवीकरण आदि का प्रयोग किया गया है पंत जी ने मुक्तछंदों का प्रयोग खुलकर किया है।

पंतजी की भाषा शुद्ध खड़ीबोली है इसे कांतिमय बनाने में इनका विशेष योगदान है।

अपनी भाषा में इन्होंने तत्सम-तद्भव शब्दों तथा अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों को भी ग्रहण किया है। आलोचकों ने पंतजी की भाषा को 'परिपूर्ण सर्जना की भाषा' स्वीकार किया है।

महादेवी वर्मा :– महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई० में फर्रुखाबाद में हुआ था। इनके माता-पिता दोनों शिक्षा प्रेमी थे। इनके नाना भी ब्रजभाषा के कवि थे। इससे बचपन से ही महादेवी वर्मा में कविता करने की रुचि उत्पन्न हो गई। प्रारंभिक कविता 'चाँद' पत्रिका में प्रकाशित हुई और साथ ही उनका स्वागत भी हुआ। सरस गीतों की रचना में तो ये आधुनिक युग की मीरा मानी जाती हैं। इसमें संगीतकला, चित्रकला और काव्यकला का अद्भुत समन्वय है।

रचनाएँ :– नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा।
संस्मरण :- पथ के साथी, स्मृति की रेखाएँ, शृंखला की कड़ियां, अतीत के चलचित्र।

महादेवी वर्मा के छायावाद में वेदना-भाव का प्राधान्य है इसी कारण आलोचकों ने इन्हें पीड़ावाद की कवयित्री कहा है। महादेवी वर्मा के शब्दों में --- "दुःख मेरे ------ कवि का मोल है।" महादेवीजी की वेदना 'स्वपरक' और 'परपरक' दोनों रूपों में है, पर व्यक्तिगत वेदना से अधिक महत्व सामाजिक वेदना को दिया गया है।

छायावाद के साथ-साथ महादेवी जी रहस्यवाद की भी कवयित्री हैं, इनके रहस्यवाद में आत्मा एवं परमात्मा के रागात्मक सामंजस्य का वर्णन है इनके रहस्यवाद में आत्मा, परमात्मा एवं प्रकृति तीनों का समावेश हो जाता है।
"कनक ------------ चित्राधार॥"

Scanned with Cam

महादेवी वर्मा की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली इसमें तत्सम तद्भव शब्दों का नियोजन मिलता भाषा के अत्यंत कोमल और मधुर स्वर इन रचनाओं में परिलक्षित हैं। कहीं कहीं इनकी भाषा में सांकेतिक शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। महादेवी वर्मा गीतिकाव्य की रचना की है, जो चित्र शैली एवं प्रगीत शैली में है। वियोग शृंगार, शांत एवं करुण रस का इनके काव्य में प्राधान्य है। उपमा, रूपक एवं समासोक्ति अलंकारों के प्रयोग से काव्य कोमल दिखाई पड़ता है। फिर भी भावों के उत्कर्ष से पद्य बहुत ही मार्मिक हुए हैं।

डॉ० रामकुमार वर्मा :— डॉ० वर्मा का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिले में संवत् 1962 में हुआ था। इनके पिता सहायक कमिश्नर के पद पर नियुक्त थे, अतः अक्सर बदली होते रहने से इन्हें भिन्न-भिन्न स्थानों की भाषा का ज्ञान बचपन में ही हो गया। इनकी माता का प्रभाव इनके ऊपर बहुत अधिक पड़ा, क्योंकि वे मीरा और तुलसी के पद बहुत प्रेम से गाया करती थीं और ये वर्मा तन्मय होकर सुना भी करते थे। इस प्रकार, कविता के प्रति वर्माजी का जन्मजात प्रेम है।

अपनी माता की प्रेरणा पाकर वर्माजी ने सर्वप्रथम काव्य क्षेत्र में प्रवेश किया। अतः ये पहले कवि और बाद में एकांकीकार, नाटककार, निबंधकार एवं आलोचक हैं। वर्माजी को हिन्दी एकांकी कला का जनक माना जाता है। आलोचना के क्षेत्र में 'कबीर का रहस्यवाद' और 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। प्रबंधकाव्यों में वीर हमीर, कुल-ललना, चित्तौड़ की चिता,

Scanned with Cam